जन्म शताब्दी पुस्तकमाला– ६७

युग परिवर्तन में समर्थ दीपयज्ञ

(प्रवचन)

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
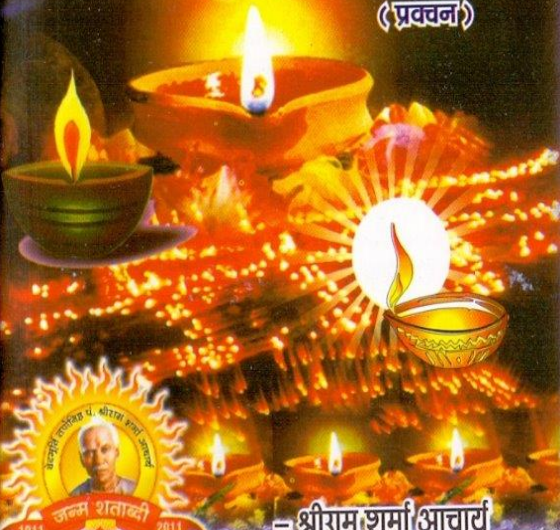
जन्म शताब्दी

1911 2011

– श्रीराम शर्मा आचार्य

युग-परिवर्तन में समर्थ दीपयज्ञ

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! गज-ग्राह का आख्यान तो आपने सुना होगा; गज, ग्राह के मुँह में फँसा हुआ जब बेबस हो गया, बेहाल हो गया और कोई रास्ता उसको दिखाई नहीं पड़ा तो उसने भगवान को पुकारा, क्योंकि भगवान के सिवाय कोई और सहायता करने वाला था नहीं, उसके पास। तो भगवान को किस तरीके से पुकारा ? भगवान को पुकारने के लिए अनेक उपाय हैं। कहीं कीर्तन किए जाते हैं, कहीं यज्ञ किए जाते हैं, कहीं अनुष्ठान किए जाते हैं, कहीं जप किए जाते हैं, लेकिन बेचारा गज! यह सब नहीं कर सकता था। उसने एक फूल उसी पानी में से कहीं से उठा लिया और अपनी सूँड़ को ऊँचा करके भगवान को जोर-जोर से पुकारा। भगवान ने उसकी भावना

को समझा, हृदय को समझा, मुसीबत को समझा, उसके कष्ट को समझा, अंतरात्मा को समझा और दौड़ करके आए तथा अपने सुदर्शन चक्र से ग्राह को मार डाला और गज को छुड़ा लिया। आपको यह कथा मालूम है न!

ठीक यही कथा, मनुष्य जाति के सामने इस समय भी उपस्थित हुई है। मनुष्य जाति को आप गज के तरीके से मान सकते हैं, जो फिलहाल अनेक मुसीबतों में फँसी हुई है। बहुत सी मुसीबतें तो पहले भी हमने बताई थीं। फिर बता रहे हैं। वातावरण बिगड़ रहा है, वायुमंडल बिगड़ रहा है, जनता की संख्या अंधाधुंध बढ़ती हुई चली जा रही है। विकिरण बढ़ रहा है, युद्ध की सामग्रियाँ बढ़ रही हैं, जिससे कि हर आदमी की मुश्किलें बढ़ती चली जा रही हैं। ये सब बातें तो पहले भी आपको बताई थीं, लेकिन इस साल, जिस साल कि आप सब सामने बैठे हुए हैं, इसकी कुछ विशेष मुसीबतें हैं। उन विशेष मुसीबतों की ओर आपका ध्यान जाना चाहिए,

आपको उनका अनुभव करना चाहिए। अभी इस साल कितनी महँगाई है, आपको मालूम है ? टमाटर बाजार में बीस रुपया किलो मिल रहा है, आपको मालूम है न, महँगाई का क्या हाल है ? महँगाई के मारे सामान्य आदमी का सौ में से निन्यानवे आदमियों का कचूमर निकल रहा है। यह एक मुसीबत इस समय की है।

दूसरी मुसीबत इस समय की क्या है ? प्रकृति हमसे नाराज हो गई है और उसने नाराज होकर वर्षा के ऊपर अपना प्रभाव डाला है। समय पर वर्षा न होने की वजह से क्या-क्या मुसीबतें आ रही हैं, आपको मालूम है न ? खेती सूख रही है, कुओं का पानी नीचा होता चला जा रहा है, डेम और नदियों का पानी पहले की अपेक्षा घटता चला जा रहा है। पानी की कमी से बिजली कम पैदा होने की मुसीबत आ रही है। बिजली की कमी से बत्ती, पंखे, कल-कारखानों की पचासों समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं और गाँवों में तो बिजली के बिना ट्यूबबैल चल

नहीं पाते। कोई और तरीका तो है नहीं सिंचाई का, क्योंकि नहरों, तालाबों के सूखने से पानी का कोई और इंतजाम नहीं है। हमारे यहाँ ज्यादातर बिजली पानी से ही बनती है। पानी का अभाव हुआ तो बिजली बनाना तो दूर, पीने का पानी, नहाने का पानी, खेती का पानी और ट्यूबवैलों से जो कुछ निकल सकता था, वह सब भी दैनिक आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर सकता। पानी की एक बड़ी भारी मुसीबत है।

महँगाई एक, पानी दो, इनके अतिरिक्त एक और तीसरे नंबर की मुसीबत है जो कि आप लोगों के सामने है। वह कौन सी है? वह यह है कि पुराने जमाने में जब अकाल पड़ते थे और खाने-पीने की चीजों का अभाव होता था, तो लोग भीख माँगने लगते थे या कुछ और काम करने लगते थे, पर आजकल तो आप जानते ही हैं कि चोरी, उठाईगीरी और डकैतियों के अलावा और कोई तरीका ही नहीं रह गया है। एक ही सबसे सस्ता

तरीका है कि हत्या, चोरी और उठाईगीरी की जाए। अवांछनीय तत्त्वों की वृद्धि होने की इस साल विशेष संभावना है, आक्रमण बढ़ेंगे और तरह-तरह की मुसीबतें भी बढ़ेंगी। यह तीसरे तरह की मुसीबत है।

क्या सांप्रदायिकता कुछ ठंढी हुई है? नहीं, यह बिलकुल ठंढी नहीं हुई? विवाद एक जगह ठंढा नहीं होने पाता कि कहीं और तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। यह सांप्रदायिक उपद्रव कृष्ण जन्मभूमि से लेकर बाबरी मसजिद तक, हर जगह इसी के लिए धुआँ निकल रहा है, हर तरफ आग लग रही है। यह आग विकराल रूप धारण कर ले तो कोई अचंभे की बात नहीं मानी जाएगी।

आतंकवाद! आतंकवाद को आप देख रहे हैं न? कहीं बम फट रहे हैं, कहीं गोलियाँ चल रही हैं, कहीं कुछ और हो रहा है। ये सारी की सारी मुसीबतें, पाँचों मुसीबतें इस तरह की हैं जो कि आजकल हम सब लोगों के ऊपर ठीक उसी तरीके

से छाई हुई हैं, जैसे गज के ऊपर मुसीबत आई थी। अब हम लोग क्या करें? जो कोई उपाय होगा, वह किया भी जाएगा। जनता करेगी, गवर्नमेन्ट करेगी, समाज से भी किया जाएगा। जो कुछ भी उपाय संभव हैं, हम सब लोग करेंगे ही। उसके बारे में तो मुझे कुछ कहना नहीं है। गवर्नमेन्ट इसके संबंध में मार्गदर्शन करती ही है। समाज के नेता भी बताते रहते हैं कि इस मुसीबत के वक्त में पानी कम खरच करना चाहिए। बिजली भी कम खरच करनी चाहिए। तालाब बनाना चाहिए, कुएँ खोदने चाहिए। सब अलग-अलग उपाय बताते ही हैं। ये भौतिक तरीके हैं। लेकिन इससे भी बड़ा एक आध्यात्मिक उपाय है, जो गज ने अपनाया था। वह क्या? उसने भगवान को पुकारा था। देवताओं और दैत्यों में जब भी लड़ाई हुई, देवता मुसीबत में आए, तो वे भागकर के भगवान के पास में गए और यह कहा कि हमारी मुसीबत को आप दूर कर दीजिए। तब भगवान ने कोई न कोई उपाय निकाला,

चाहे दुर्गा का निर्माण किया हो, चाहे सीता का, दधीचि की अस्थियों से इंद्रवज्र बनाया हो, चाहे स्वर्ग से गंगा को धरती पर लाया गया हो, जो भी उपाय किया गया हो, लेकिन किया जरूर गया।

ऐसे बड़े उपाय भगवान के द्वारा ही संभव हैं, इनसान के द्वारा यह संभव नहीं है। भगवान को पुकारने के लिए हमने इस समय में एक बड़ा उपयोगी और बड़ा ही आवश्यक उपाय निकाला है। यह जोश बढ़ाने वाला उपाय आपके सामने है और आपको बताया भी जा चुका है कि अब यज्ञ वैसे नहीं होने चाहिए, जिसमें कि सैकड़ों-हजारों रुपए खरच हो जाते हैं। जनता भी देने लायक स्थिति में नहीं है और यदि देने लायक भी हो, तो जनता में से हरेक का यह ख्याल है कि यज्ञ से पानी बरसना चाहिए और यज्ञ से पानी बरसने की संभावना के बारे में हम आपको कोई विश्वास नहीं दिला सकते। फिर इस साल का पूरा समय कैसे कटेगा? हम आपको इस

बात की ठीक जानकारी दे करके डराना नहीं चाहते, हैरान नहीं करना चाहते, पर यह जरूर कहेंगे कि वर्षा का संबंध उससे जुड़ा हुआ है। यज्ञ के संपन्न होने पर, वर्षा न होने पर जनता क्या कहेगी आपको? आपका उपहास होगा और यज्ञ का अपमान होगा, हमारा अपमान–जिनने स्कीम बनाई है। इसलिए यज्ञों को तो हरेक जगह जैसे पिछले साल हुए थे वैसे ही करना है। अंतर सिर्फ इतना है कि उनके स्थान पर नए यज्ञों की शैली प्रचलित की है, जो गरीब से गरीब व्यक्ति के यहाँ भी आसानी से संपन्न करा सकते हैं।

वे कौन से यज्ञ हैं? वे दीपयज्ञ हैं। दीपयज्ञ में एक थाली में पाँच दीपक रखे जाते हैं। यह यज्ञ का सामान हुआ। थाली अपने घर से लेकर के चौक पूर कर उसे सजा लें, एक रुपए का सामान उसमें रख लें, तो बड़े मजे से यह यज्ञ हो सकता है। यज्ञ के कर्मकांड तो सब वही हैं, जो सामान्य यज्ञ में हुआ करते हैं। दो–एक बातें कम कर दी

हैं जैसे घृत-अवघ्राणम्, भस्मधारणम्, वसोधारा आदि। बाकी यज्ञ के देव आवाहन मंत्र और यज्ञ का सारा स्वरूप वही है। केवल वस्तुएँ कम कर दी गई हैं। यज्ञ की वस्तुएँ कम किए जाने में कोई बुराई है ? नहीं, कोई बुराई नहीं है। यहाँ याज्ञवल्क्य-जनक का संवाद कुछ ऐसा ही है। जनक ने पूछा कि कोई खराब वस्तु हो और हम यज्ञ न कर पाएँ, तो कैसे हवन करें ? तब याज्ञवल्क्य जी ने कहा— ''यज्ञ करना तो आवश्यक है। वह तो करना ही चाहिए। गायत्री और यज्ञ तो हमारी भारतीय संस्कृति के माता-पिता हैं। इसका पूजन तो करना ही चाहिए। इनको तो भोजन कराना ही चाहिए। वायुमंडल, वायु-संशोधन के कार्य के लिए तो इन्हें करना ही चाहिए। वातावरण संशोधन का काम तो हाथ में लेना ही चाहिए, पर वस्तुएँ कम कर सकते हैं।'' तब राजा जनक ने पूछा—क्या वस्तुएँ कम कर सकते हैं ? उन्होंने कहा—''घी अगर आपके पास न हो, तो केवल हवन-सामग्री से जो वनस्पतियों से बनती

है, उससे ही आप हवन कर लें।'' इस तरह बिना घी के आप हवन कर लें। उन्होंने फिर कहा—वर्षा नहीं होगी तो वनस्पतियाँ भी पैदा नहीं होंगी, तो फिर कैसे हवन करेंगे ? तो याज्ञवल्क्य जी ने कहा— ''आप लकड़ियों की समिधाओं से भी हवन कर सकते हैं।'' कहने का आशय है कि कम से कम वस्तुओं से हवन कर सकते हैं। इसी तरह मुसीबत के समय में आपातकालीन परिस्थितियों में हमने दीपयज्ञ करने के लिए कहा है लोगों से और लोगों ने स्वीकार भी किया है। इसको आपको भी करना चाहिए। इसमें जो श्लोक बोले जाएँगे, भावनाएँ जो आपको मिलेंगी, उसके कारण से पुण्य उतना ही मिलेगा जितना कि यज्ञकुंडों को खोदकर के हजारों रुपया इकट्ठा जो किया करते थे। लगभग उतना ही पुण्य मिल जाएगा इस यज्ञ से।

यह यज्ञ का तरीका है एक। यज्ञ का तरीका नंबर दो—सवेरे प्रातःकाल सूर्योदय के समय पर यज्ञ प्रारंभ हो जाना चाहिए। जब तक धूप फैलती

है और ठंढक रहती है। अपने घर के काम का वक्त होता है, दुकान खोलने का वक्त होता है। उस समय से सवेरे का कार्यक्रम तो वैसे ही समाप्त हो जाएगा, यह भी आपको भुला नहीं देना चाहिए। सायंकाल का एक और कार्यक्रम है। सायंकाल का कार्यक्रम क्या है ? वह कार्यक्रम यह है कि सायंकाल को कीर्तन किया जाए। पुराने कीर्तनों और हमारे कीर्तनों में थोड़ा फरक है। पुराने कीर्तनों में तो केवल 'रामभज' हुआ करते थे। 'रामभज' में हरे रामा, हरे रामा, हरे कृष्णा, हरे कृष्णा; बस केवल रामधुन होती थी। हमारे कीर्तनों में विचार और टिप्पणियाँ भी जुड़ी हुई हैं। भगवान का नाम भी है और भगवान के नाम के साथ में विचार भी जुड़े हुए हैं और टिप्पणियाँ भी जुड़ी हुई हैं। यह आपको सौ-सौ कुंडीय यज्ञ के समय भी बताया गया था। सौ कुंडीय यज्ञ के लिए हमने बुलाया भी था। सौ कुंडीय यज्ञ में आप भी उत्साहपूर्वक भाग ले करके आए थे। अब भी आप सौ कुंडीय यज्ञ कर

सकते हैं। सौ रुपए लागत आएगी इसमें। बड़े मजे से इसे आप कर सकते हैं।

यज्ञ के बाद में, व्याख्यान के बाद में देवदक्षिणा आवश्यक है। देवदक्षिणा में यह आवश्यक है कि आप अपनी बुराइयों का त्याग करें और अपनी अच्छाइयों को बढ़ाएँ। ये भी वातावरण संशोधन का एक बड़ा कार्य है। जो प्रकृति हमसे नाराज हुई है, जो मुसीबतें आई हैं, ये सब मनुष्य के स्वभाव, मनुष्य के गुण, मनुष्य के कर्म, मनुष्य की वृत्तियों में फरक आ जाने के कारण आई हैं। आप इसको भी ठीक कर सकते हैं। यानि कि यज्ञ के बाद में जब देवदक्षिणा दी जाए तो उसमें अपनी कोई न कोई एक बुराई छोड़ी जाए और कोई न कोई एक अच्छाई बढ़ाई जाए। ये काम करना भी आवश्यक है। यही देवदक्षिणा है। दक्षिणा के लिए पंडित जी को एक हजार रुपए देंगे और उनको पाँच कपड़े देंगे, खाना देंगे, नहीं। ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है। ये सामूहिक यज्ञ है। देवी-देवताओं का

हम आह्वान करेंगे, उनका पूजन और सम्मान करेंगे। यज्ञ में जो आदमी आएँगे, जो भी यज्ञ में सम्मिलित होंगे, जो भी हवन के मंत्र बोलेंगे, जो भी आहुतियाँ देंगे वे सारे के सारे सहकर्मी होंगे, सहयोगी होंगे। इनमें से कोई ऐसा पंडित नहीं होगा जो दक्षिणा के लिए आया हो। यदि कोई पैसे की नौकरी के लिए आता है, वह देवता नहीं हो सकता, ब्राह्मण नहीं हो सकता। पैसे की नौकरी की जरूरत नहीं है, आपको! लेकिन देवी-देवताओं को दक्षिणा तो देनी ही पड़ेगी, जिनको आपने बुलाया है, जिनसे आपने उम्मीद रखी है कि इंद्र देवता हैं, वर्षा करें तो आखिर उनके चरणों पर हमें फूल तो रखना चाहिए। देवता आएँगे तो कुछ पूजन-अर्चन तो करना ही चाहिए आपको। पूजन-करने की विधियों में ये भी शामिल है कि आपको देवदक्षिणा के रूप में कोई न कोई बुराई त्यागनी पड़ेगी और कोई एक अच्छाई धारण करनी पड़ेगी।

ये सौ कुंडीय यज्ञ क्वार की पूर्णिमा यानी कि शरद पूर्णिमा को प्रारंभ करेंगे और चैत्र की पूर्णिमा को समाप्त करेंगे। ये पूरे छह महीने हो जाते हैं। छह महीने के बीच आपको एक कार्य करना चाहिए कि अपने गाँव में, अपने नगर में, अपने मोहल्ले में प्रत्येक घर के साथ संपर्क बढ़ाना चाहिए। यह संपर्क यज्ञ है। संपर्क यज्ञ का अर्थ है कि प्रत्येक घर में आप जाइए और प्रत्येक घर के लोगों को तैयार कीजिए। आपके कुटुंब को, आपके परिवार को, आपके घर के लोगों को भी हमको ये कुछ शिक्षाएँ देनी हैं और साथ-साथ में भगवान का स्मरण भी कराना है। आपके घर में सुख-शांति भी लानी है। अतः प्रत्येक घर में एक यज्ञ का आयोजन करने का कार्यक्रम आपको इन छह महीनों में जारी रखना चाहिए। आवश्यकता हुई तो फिर कहेंगे कि छह महीने से भी ज्यादा जारी रखिए। फिलहाल आपको छह महीने का संकल्प तो दिला ही रहे हैं। इन

छह महीनों में अपने नगर में, अपने गाँव में, अपने मोहल्ले में कोई घर ऐसा मत रहने दीजिए, जहाँ यह एक कुंडीय यज्ञ न हुआ हो।

एक कुंडीय यज्ञ का आप मतलब तो समझ ही गए हैं न! एक थाली में पाँच धूपबत्तियाँ और पाँच दीपक रखें। थाली को हल्दी, रोली अथवा आटे द्वारा सजा भी सकते हैं। ये दैनिक उपयोग की वस्तुएँ हर घर में रहती ही हैं। यदि आपको ये मालूम पड़ता हो कि एक घंटे के समय में पाँच धूपबत्तियों में खरच ज्यादा हो जाएगा, पाँच दीपक में खरच ज्यादा हो जाएगा, तो आप किफायत भी कर सकते हैं। पाँच दीपक हैं पहले एक जलाइए। पहला बुझने लगे तो दूसरा जला दीजिए। दूसरा बुझने लगे तो तीसरा जला दीजिए। तीसरा बुझने लगे तो चौथा जला दीजिए, फिर पाँचवाँ जला दीजिए। इस तरीके से एक-एक दीपक से काम चल सकता है। पाँच दीपक की स्थापना तो करनी ही पड़ेगी क्योंकि यह पाँच देवों का आह्वान है। इसमें पाँच प्राणों का आह्वान

है, पाँच तत्त्वों का आह्वान है। अतः पाँच दीपकों की यह स्थापना तो करनी ही पड़ेगी। धूपबत्ती के संदर्भ में भी यही बात है। अगर आपको कहीं किफायत की बात मालूम पड़े और ये मालूम पड़े कि गरीबी बहुत ज्यादा है तो पैसे का खरच और भी कम कर सकते हैं। तब पाँच धूपबत्तियों में से एक जला दीजिए, 'चार बिना जली रहने दीजिए, एक धूपबत्ती जलकर खत्म होने को हो, तब दूसरी जला दीजिए। जब वह खत्म हो तो तीसरी फिर चौथी और पाँचवीं जलाएँ। इस तरीके से पाँच बार में पाँच धूपबत्तियों के जो आपने बंडल बनाए और पाँच दीपक बनाए, उनको एक-एक करके पाँच हिस्से से जलाएँ तो पाँचवें हिस्से से आपका काम चल जाएगा और किफायत भी हो जाएगी। मैं किफायत की बात इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि अगले दिनों आपको पैसे की तंगी पड़ेगी, ज्यादा खरच करना मुसीबत लाएगा। जो आदमी ज्यादा खरच करता है, वह ज्यादा फायदे की भी उम्मीद करता है, लेकिन जिसका थोड़ा

खरच हुआ है उस बेचारे का थोड़ा समाधान हो जाए तो भी काम चल जाता है। यज्ञ इसलिए लोगों को अखरता है। यज्ञ के नाम पर कम से कम खरच कराना चाहिए। जो विधियाँ आपको बताई गईं हैं, उसी के हिसाब से हर घर में जाकर के यज्ञ कराना चाहिए।

घरों में जो यज्ञ आप कराएँ, उसमें ये कुछ बातें शामिल करें। वास्तव में यह हम परिवार-गोष्ठियों के रूप में पारिवारिक यज्ञ कर रहे हैं। इसमें परिवार-निर्माण का उद्‌देश्य छिपा हुआ है, जो कि समाज-निर्माण से भी संबंधित है और यज्ञ के निर्माण से भी संबंधित है। यज्ञ के निर्माण और समाज-निर्माण के बीच की इकाई यह परिवार-निर्माण है। परिवार-निर्माण पारिवारिक यज्ञों के माध्यम से होगा। इसमें सुबह परिवार यज्ञ किया जाए और शाम को कीर्तन की व्यवस्था की जाए। भले ही महिलाएँ मिल-जुलकर कर लें। कोई बात नहीं है, पर करना जरूर चाहिए। लेकिन साथ में जो देवदक्षिणा वाला प्रकरण है उसे नहीं भूलना

चाहिए। देवदक्षिणा हर घर के यज्ञ में भी होनी चाहिए। और क्या-क्या होना चाहिए? कुछ खास बातें हैं जो जरूर करनी चाहिए। प्रथम तो यह कि प्रातःकाल सूर्योदय के समय पर भगवान का स्मरण करना। इस समय यह बहुत ही आवश्यक है। सूर्योदयकाल की अपनी खास विशेषता है। चाहे सुबह कर लेंगे, दोपहर को कर लेंगे, शाम को कर लेंगे। नहीं भाईसाहब। बिलकुल सवेरे ही सूर्योदय के समय पर ही नाम स्मरण करना होगा, चाहे आप नहाएँ हों या न नहाएँ हों। सूर्योदयकाल में एक ही तरीके से, एक ही समय में, एक ही प्रकार का कार्य करने से उसकी शक्ति सौ गुनी हो जाती है, इसलिए यह प्रातःकाल का जप आवश्यक बताया गया है। उसके बारे में आप घर-घर में जाकर हर आदमी से मिलकर कहिए कि प्रातःकाल का जप करना शुरू करें, चाहे दस मिनट का ही क्यों न हो!

इसके सिवाय एक और बात है। हमारे देश को गिराने वाली कुछ चीजें हैं। उनसे अपने आप

को उबारने की कोशिश करनी चाहिए। शिक्षा की कमी इस तरह की है कि आदमी जानवर की तरह भयानक हो जाता है। न उसके ज्ञान के कपाट खुलते हैं, न उसको नई जानकारियाँ मिलती हैं, न समाज में क्या हो रहा है ये पता चलता है, न उसे लोग किस तरीके से आगे बढ़ रहे हैं, ये जानकारियाँ मिलती हैं। वह एक तरीके से कुएँ का मेंढ़क बनकर रहता है इसलिए आपको शिक्षा के बारे में प्रौढ़-शिक्षा आंदोलन को इन्हीं यज्ञों के साथ में जोड़कर प्रारंभ कर देना चाहिए। आप लोगों में से जो कोई पढ़े-लिखे हों, उन्हें यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि "हम पाँच बिना पढ़े-लिखों को तो जरूर ही पढ़ा देंगे।" चाहे तो आप उनके घर जाइए, चाहे उन्हें अपने घर बुलाइए, चाहे एक महीने पढ़ाइए या छह महीने पढ़ाइए, चाहे दो वर्ष पढ़ाइए। आप यहाँ से एक संकल्प लेकर के जाइए कि "पाँच व्यक्तियों को तो पढ़ाएँगे ही।" परिवार में होने वाले यज्ञों की यह प्रमुख बात है। जो व्यक्ति पढ़ा नहीं सकते,

वे पढ़ तो सकते हैं। घरों में बुड्ढे-बुढ़ियाँ, जवान स्त्रियाँ बिना पढ़ी होती हैं। उनको पढ़ाने का एक आंदोलन हमें इसी यज्ञ योजना में शामिल करना है।

दूसरा एक और आंदोलन है जो इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। वह क्या है? जो कुछ भी हम कमाते हैं, वह सब पेंदे के छेद में से होकर निकल जाता है। फूटे हुए घड़े में पानी चाहे जितना डालते जाइए, पर पेंदे में बने छेद में से होकर सब निकल जाएगा और घड़ा खाली का खाली बना रहेगा। इस पेंदे का छेद है—हमारे समाज में ब्याह-शादियों में होने वाला खरच। खरचीली शादियाँ हमें दरिद्र, बेईमान बनाती हैं। यह तो हमने आपको पच्चीसों बार कहा है और कहते रहेंगे हमेशा। हमारा देश जो तबाह हुआ है, जो गरीब हुआ है, जो बरबाद हुआ है उसमें ब्याह-शादियों वाली बात ऐसी है कि इसको अगर खरचीला बनाए रखा गया तो आप समझिए कि हम आमदनी बढ़ाने का चाहे

जितना प्रयत्न करें तो भी हम गरीब के गरीब बने रहेंगे। इसके लिए क्या करना चाहिए? आप सब लोगों को इसके लिए ये प्रतिज्ञाएँ करना चाहिए, अभिभावकों को ये प्रतिज्ञाएँ करनी चाहिए कि "हम अपने बच्चे और बच्चियों की शादियों में धूम-धाम नहीं करेंगे-एक; दिखावा नहीं करेंगे-दो; दहेज नहीं लेंगे और न देंगे-तीन और जेवर नहीं चढ़ाएँगे-चार।"

ब्याह-शादियों में जेवर और दहेज का कितना बड़ा संबंध है, ये आपको मालूम नहीं है। लड़के वाला माँगता है दहेज। क्यों माँगता है? क्योंकि उससे जेवर माँगा जाएगा। लड़की वाला माँगता है जेवर और लड़के वाला माँगता है दहेज। ये दोनों ही बातें मरेंगी तो एक साथ ही मरेंगी। अगर जिंदा रहेंगी तो दोनों ही बातें जिंदा रहेंगी। आप अकेले दहेज को बंद करना चाहें और ये चाहें कि हमारी लड़की पर जेवर जरूर चढ़ाएँ, तो बेचारा बेटे वाला कहाँ से लाएगा जेवर के लिए सोना? आज सोने

का कितना महँगा भाव है। आज सोने का भाव आसमान छू रहा है। इसमें अगर मान लो कोई आदमी पचास ग्राम का भी जेवर बनवाना चाहे तो उसको लाखों रुपया चाहिए। यह कहाँ से आएगा? अतः जेवर के लिए वह दहेज माँगता है, तो क्या बुरा करता है। दहेज के बंद करने की यदि बात करनी चाहिए, तो जेवर को बंद करने की बात भी करनी चाहिए। अतः आप ब्याह-शादियाँ इस तरीके से कराइए जिसमें न दहेज दिया जाए, न जेवर लिए जाएँ। जिसमें न बरात चढ़ाई जाए, न धूम-धाम की जाए। न बैंडबाजे बजाएँ और न बेकार के काम किए जाएँ। घरेलू उत्सव होते हैं। हमारे घर में होली-दीपावली होती है, तीज-त्योहार होते हैं, उसी तरीके से पाँच आदमी उस तरफ के आ जाएँ और पाँच यहाँ घर के हों। अपने घर में छोटा सा हवन कर लिया जाए और शांति से ब्याह कर दिया जाए और दूसरे दिन विदा कर दी जाए। इस तरह के विवाह बहुत कम दाम पर होते हैं। किसी को दहेज ही

देना हो तो अपनी बेटी के लिए भविष्य निधि में रकम जमा कर सकता है, जो पाँच साल में दूनी हो जाएगी।

इस तरह की ब्याह-शादियों की परंपरा चलाना भी हमारा इस वक्त का कार्यक्रम है। दहेज हिंदू समाज का कोढ़ है। यह हिंदू समाज का कलंक है। शिक्षा का अभाव होना हमारे देश के लिए कलंक है। दहेज का, ब्याह-शादियों में फजूलखरचियों का होना हमारे देश का कलंक है। इसको दूर करने के लिए आप लोगों को इसी तरह के कार्यक्रम का प्रयास करना पड़ेगा और इन्हीं यज्ञों के साथ में इन दो कार्यक्रमों को भी मिलाना पड़ेगा।

ब्याह-शादियों का एक और भी तरीका है। ज्यादातर होता यह है कि मोहल्ले वाले, पड़ोसी, यार-दोस्त, मित्र और संबंधी ये कहते हैं कि नहीं साहब नाक कट जाएगी, बात बिगड़ जाएगी। ऐसा तो नहीं होना चाहिए। धूम-धाम तो होनी ही चाहिए। मोहल्ले में फलाने का इतना बड़ा ब्याह

हुआ था, आपको क्यों नहीं करना चाहिए? जहाँ इस तरह की मुसीबतें हों, जहाँ इस तरह के गिद्ध-कौए चारों ओर से घेरे हों आपको और आपको यह मालूम पड़ता हो कि इस मुसीबत से निकलने का कोई उपाय नहीं है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि आप कन्या को ले आइए, लड़के को ले आइए और पाँच-पाँच आदमी दोनों पक्षों के आ जाइए और यहाँ शांतिकुंज में आप बड़े मजे से विवाह करके ले जाइए, बिना खरच किए। यहाँ किसी तरह का खरच नहीं पड़ेगा। न यहाँ किसी तरह का दिखावा करना पड़ेगा, न फर्नीचर देना पड़ेगा। न कोई दहेज माँगने की हिम्मत करेगा, न कोई जेवर चढ़ाने का नियम है। पाँच आदमी आएँगे। आप यहाँ खाना खाइए। यहाँ के चौके में एक हजार आदमी खाना खाते हैं। पाँच आदमी बरात के आ जाएँ, वे हमारे मेहमान की तरह खाना खा जाएँगे तो हमारा क्या बिगड़ जाएगा। इसलिए इस तरह के विवाहों को मेरी समझ में ये ज्यादा अच्छा है

कि इस रिवाज को फैलाने के लिए आप स्थानीय स्तर में सफल नहीं हो पाते हैं, तो आप इसमें तो बड़ी आसानी से सफल हो जाएँगे कि हमारे जो विवाह होंगे वे हमारे गुरुद्वारे में होंगे और वे शांतिकुंज में होंगे। शांतिकुंज में विवाहों का यही प्रचलन चलेगा। यह तीर्थस्थान भी है। देवताओं का यहाँ निवास भी है। यहाँ यज्ञ भी होता है, ऐसे शुद्ध स्थान पर विवाह संस्कार संपन्न करें। जैसे शुभ मुहूर्त की बात सोची जाती है वैसे ही आप शुद्ध स्थान की बात सोचिए। मुहूर्त की बात मत सोचिए? आप कभी भी ले आइए। यहाँ हमेशा ब्याह हो जाता है क्योंकि यहाँ शुभ वातावरण है, शुभ भूमि है, शुभ एवं पुनीत स्थान है। इसलिए यहाँ मुहूर्त की जरूरत नहीं है, आप इस बात को जान लीजिए।

दो बातें और रह जाती हैं इसके सिवाय। पहली है नशेबाजी की बात, आप नशेबाजी को छुड़ाइए, नहीं तो अगली पीढ़ियाँ घटते-घटते, गिरते-गिरते किसी काम की न रह जाएँगी। आपको यह

तो मालूम ही है कि नशे से शरीर मारा जाता है, बुद्धि भी मारी जाती है, पैसा भी बरबाद हो जाता है। कुटुंब भी तबाह हो जाता है और बच्चों का भविष्य भी खराब हो जाता है। आदमी ऐसा बन जाता है जिसका न कोई विश्वास करता है, न कोई पास बैठने देता है। पीढ़ियों की यह गिरावट अगर बनी रही तो पचास-चालीस वर्ष में एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी कमजोर होगी। दूसरी के बाद तीसरी कमजोर होगी और हम वास्तव में फिर इस लायक हो जाएँगे कि हमको अपने शरीर को धकेलना मुश्किल हो जाएगा। इसीलिए करना आपको यह चाहिए कि नशेबाजी के विरुद्ध भी जो कुछ आपके लिए संभव हो, उसको जरूर करना चाहिए।

नशेबाजी के सिवाय एक और बात है। शाक-भाजी उगाने को तो हम कह नहीं सकते, क्योंकि जब वर्षा का अभाव होगा तो आप शाक-भाजी कहाँ से उगा पाएँगे? शाक-भाजी मनुष्य के जीवन

के लिए उतनी ही आवश्यक है जितना अनाज। अनाज से कम आवश्यक नहीं है। आप शाक-भाजी उगाने के लिए अपने घरों में इंतजाम कीजिए। पानी आप पीते हैं सो ठीक है, पर जब आप कुल्ला करते हैं, नहाते हैं तो पानी बहकर बेकार चला जाता है। उस पानी को इकट्ठा कर लीजिए और अपने घरों में, गमलों में, टोकरों में, पिटारों में, किसी में जो आपने उगा रखा है, उसी में उस पानी को आप डाल दीजिए। जो आपके स्नान से बचा हुआ है, जो आपके पीने से बचा हुआ है, जो आपके हाथ धोने से बचा हुआ है, उस पानी को भी शाक-भाजी में डाल दें, तो शाक-भाजी पैदा हो सकती है। मान लीजिए कि उस शाक-भाजी से आप घर का पूरा खरचा नहीं भी चला सकते हैं, तो उससे कम से कम चटनी का काम तो चल ही सकता है। रूखी रोटी खाने के बजाय आप चटनी से तो काम चला सकते हैं। चटनी ही एक ऐसी चीज है कि जिससे हमारे लिए बड़ी सहूलियत मिलती है।

आपकी यह धनियाँ है, पोदीना है, पालक है, अदरक है, मिर्च है और टमाटर है। ये चीजें तो आसानी से लगा सकते हैं। कोई और शाक नहीं बो सकते आप, चटनी का सामान तो आसानी से इकट्ठा कर सकते हैं।

तो साहब! शाक-भाजी का लगाना एक, नशेबाजी का विरोध करना दो, ब्याह-शादियों में खरच न होने देना, सादगी के साथ ब्याह करना तीन और प्रौढ़ शिक्षा के बारे में ज्यादा से ज्यादा प्रचार करना चार, छोटे बच्चों का तो यह भी है कि गवर्नमेंट स्कूलों में पढ़ा लेते हैं लेकिन बड़ों की संख्या तो दो तिहाई है। दो तिहाई हमारे देश के बिना पढ़े-लिखे लोग हैं। उनको शिक्षित करने की बात पर हम लोगों को ध्यान देना चाहिए, तैयारी करनी चाहिए। अब इन सभी बातों को ध्यान में रखकर के हमारे यज्ञों की पूर्णता इन बातों में जोड़नी चाहिए कि आपके यज्ञ के साथ-साथ में भावनाएँ जुड़ी हुई हों, सेवाएँ जुड़ी हों। देश को ऊँचा उठाने,

आगे बढ़ाने की मनोवृत्ति भी जुड़ी हुई हो। यज्ञ भी जुड़ा हुआ हो, कीर्तन भी जुड़ा हो और भगवान का नाम स्तवन भी जुड़ा हुआ हो। साथ ही अपनी बुराइयों को छोड़ने और अच्छाइयों को बढ़ाने का प्रयत्न भी जुड़ा हुआ हो। इन सबको मिलाकर चलेंगे तो आप यह मान लीजिए कि यज्ञ में जो भी बड़े से बड़ा कार्यक्रम होगा, इन कार्यक्रमों के आधार पर ही वह पूरा हो जाएगा और वही फल मिलेगा आपको जो बड़े यज्ञों से मिलना चाहिए। मुझे आशा है कि आप इन बातों को ध्यान से सुनेंगे और उसको कार्यान्वित करने में कोई कसर उठा नहीं रखेंगे। इतना ही निवेदन है, आप सब लोगों से। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांतिः ॥

❐

दीपयज्ञों का उद्देश्य विश्व एकता-समता

दीपयज्ञ मात्र कर्मकांड नहीं है। इसका मूलभूत उद्देश्य सार्वभौम एकता और समता है। साम्यवादियों द्वारा मजदूरों और गरीबों को एक हो जाने की आवाज उठाई गई है। दीपयज्ञों द्वारा संसार के सभी विचारशीलों और भावनाशीलों को एकत्रित और संगठित होने के लिए कहा जा रहा है; ताकि दुष्प्रवृत्तियों के, कुप्रचलनों के विरोध में जिहाद बोला जा सके और उस नवयुग की स्थापना हो सके, जिसे कभी सतयुग के नाम से पुकारा जाता था, जिसमें मनुष्य में देवत्व और धरती पर स्वर्ग का अवतरण दृष्टिगोचर होता था।

सार्वभौम एकता इक्कीसवीं सदी का लक्ष्य निर्धारण और संकल्प है। अगले दिनों सभी प्रकार के उन विलगावों का अंत होना है, जो मनुष्य को मनुष्य से दूर रखते और विद्वेष के बीज बोते हैं। संसारभर के आदमियों की एक भाषा होनी चाहिए; ताकि विचारों के आदान-प्रदान का एक माध्यम सर्वत्र

काम में आ सके। एक जाति-मनुष्य जाति। एक देश-समस्त विश्व। एक धर्म-मानव धर्म। एक व्यवस्था-पारिवारिकता की रीति-नीति। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दीपयज्ञ की शुरुआत हुई है। और वह अपनी मंजिल पर अगली ही शताब्दी में पहुँचकर रहेगा। न गरीब-अमीर का भेद रहेगा और न संप्रदाय अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग-अलग पकाते दिखाई देंगे। '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' और '**आत्मवत सर्वभूतेषु**' के सिद्धांत को सार्वभौम मान्यता मिलेगी।

दीपयज्ञों में बिना जाति, लिंग, धर्म-संप्रदायों का भेदभाव किए सभी लोग समान श्रद्धाभाव सहकार के साथ भाग लेते हैं। किसी को अपना-पराया नहीं माना जाता। किसी को श्रेय नहीं दिया जाता, किसी को तुच्छ नहीं समझा जाता। समता और एकता की पृष्ठभूमि बनाने के लिए यह आवश्यक भी है। धर्मधारणा का मूलभूत उद्देश्य भी यही है, जिसे समझने-अपनाने का अवसर मिलता है।

❐

सद्वाक्य

✧ जो अपनी सहायता आप करने को तत्पर हैं, ईश्वर केवल उन्हीं की सहायता करता है।

✧ प्रसन्न रहने के दो ही उपाय हैं— आवश्यकताएँ कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बिठाएँ।

✧ ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारें।

✧ सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है, जो आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।

✧ भलाई कभी मरती नहीं और न भला आदमी कभी मरता है।

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)